1. श्रम विभाजन और जाति प्रथा

लेखक – डॉ. भीमराव अंबेडकर

लेखक परिचय- मानव मुक्ति के पुरोधा भीमराव अंबेडकर का जन्म 14 अप्रैल, 1891 ई0 में मध्य प्रदेश के महू में हुआ था। ये प्रारंभिक शिक्षा के बाद बड़ौदा नरेश से प्रोत्साहन पाकर उच्च शिक्षा के लिए न्यूयॉर्क (अमेरिका) फिर वहाँ से लंदन गये। कुछ दिनों तक वकालत करने के बाद राजनीति में सक्रिय भूमिका निभाते हुए इन्होंने अछूतों, स्त्रियों तथा मजदूरों को मानवीय अधिकार तथा सम्मान दिलाने के लिए अथक (न थकने वाला) संघर्ष किया। इनका निधन 6 दिसम्बर 1956 ई० में हुआ।

प्रमुख रचनाएँ- द कास्ट्स इन इंडिया, देयर मेकेनिज्म, जेनेसिस एंड डेवलपमेंट, हू आर शूद्राजः बुद्धा एंड हिज धम्मा, एनी हिलेशन ऑफ कास्ट, द अनटचेबल्स, हू आर दे, द एबोलुशन ऑफ प्रोबिंशियल फाइनांस, द राइज एंड फॉल ऑफ हिन्दू वीमैन आदि।

पाठ परिचय- प्रस्तुत पाठ 'श्रम विभाजन और जाति-प्रथा' लेखक के विख्यात भाषण 'एनिहिलेशन ऑफ कास्ट' का अंश है। यह भाषण लाहौर में जाति-पाँति तोड़क मंडल के वार्षिक सम्मेलन के लिए तैयार किया गया था। आयोजकों की सहमति न बनने के कारण सम्मेलन स्थगित हो गया और यह पढ़ा न जा सका। लेखक ने जातिवाद के आधार पर की जाने वाली असानता का विरोध किया है। इस आलेख के माध्यम से लोगों में मानवीयता, सामाजिक सद्भावना, भाई-चारा जैसे मानवीय गुणों का विकास करने का प्रयत्न किया गया है। लेखक का मानना है कि आर्दश समाज में समानता, स्वतंत्रता और भाई-चारा का होना आवश्यक है।

पाठ का सारांश

प्रस्तुत पाठ **'श्रम विभाजन और जाति प्रथा'** में लेखक ने जातीय आधार पर की जाने वाली असमानता के खिलाफ अपना विचार प्रकट किया है। लेखक का कहना है कि आज के परिवेश में भी कुछ लोग 'जातिवाद' के कटु समर्थक हैं, उनके अनुसार कार्यकुशलता के लिए श्रम विभाजन आवश्यक है, क्योंकि जाति प्रथा श्रमविभाजन का ही दूसरा रूप है। लेकिन लेखक की आपत्ति है कि जातिवाद श्रमविभाजन के साथ-साथ श्रमिक विभाजन का रूप लिए हुए है। श्रम विभाजन किसी भी सभ्य समाज के लिए आवश्यक है। परन्तु भारत की जाति-प्रथा श्रमिकों का अस्वाभाविक विभाजन करती है और इन विभिन्न वर्गों को एक-दूसरे की अपेक्षा ऊँच-नीच भी करार देती है।

लेखक कहते हैं कि जाति के आधार पर श्रम विभाजन विश्व के किसी भी समाज में नहीं पाया जाता है।

जाति-प्रथा को यदि श्रम-विभाजन मान भी लिया जाए तो यह स्वभाविक नहीं है, क्योंकि यह मनुष्य की रूचि पर आधारित नहीं है। इसलिए सक्षम समाज का कर्त्तव्य है कि वह व्यक्तियों को अपने रूचि या क्षमता के अनुसार पेशा अथवा कार्य चुनने के योग्य बनाए। इस सिद्धांत के विपरित जाति-प्रथा का दूषित सिद्धांत यह है कि इससे मनुष्य के माता-पिता के सामाजिक स्तर के अनुसार पेशा अपनाने के लिए मजबुर होना पड़ता है। जाति प्रथा में गर्भधारण के समय ही मनुष्य का पेशा निर्धारित कर दिया जाता है, जो अन्यायपूर्ण है।

जाति-प्रथा पेशे का दोषपूर्ण निर्धारण ही नहीं करती, बल्कि जीवन भर के लिए मनुष्य को एक ही पेशे में बाँध भी देती है। इसके कारण यदि किसी उद्योग धंधे या तकनीक में परिवर्तन हो जाता है तो लोगों को भूखे मरने के अलावा कोई चारा नहीं रह जाता है, क्योंकि खास पेशे में बंधे होने के कारण वह बेरोजगार हो जाता है। हिंदू धर्म की जाति प्रथा किसी भी व्यक्ति को उसका ऐसा पेशा चुनने की अनुमति नहीं देती है, जो उसका पैतृक पेशा न हो, भले वह उसमें माहिर या पारंगत ही क्यों न हो। अर्थात आप किसी कार्य में कितना भी अच्छा होते हैं, तो क्या हुआ जाति प्रथा के अनुसार अपने पिता का ही पेशा अपनाना पड़ता है।

लेखक कहते हैं कि भारत में पेशा परिवर्तन की अनुमति न होने के कारण बेरोजगारी होती है।

जाति-प्रथा से किया गया श्रम-विभाजन किसी की स्वेच्छा पर निर्भर नहीं होता। जिसके कारण लोग

निर्धारित कार्य को अरूचि के साथ विवशतावश करते हैं। इस प्रकार जाति-प्रथा व्यक्ति की स्वभाविक प्रेरणारुचि व आत्म-शक्ति को दबाकर उन्हें स्वभाविक नियमों में जकड़कर निष्क्रिय बना देती है।

जाति प्रथा में श्रम विभाजन मनुष्य की इच्छा पर निर्भर नहीं करता है, बल्कि वह अपने पिता के पेशा में बँध जाना पड़ता है। ऐसी स्थिति में जहाँ काम करनेवाले का न दिल लगता है न दिमाग। कोई कुशलता भी प्राप्त नहीं की जा सकती है।

इसलिए, लेखक कहते हैं कि आर्थिक पहलू से भी जाति प्रथा एक हानिकारक प्रथा है।

समाज के रचनात्मक पहलू पर विचार करते हुए लेखक कहते हैं कि आर्दश समाज वह है, जिसमें स्वतंत्रता, समता, भाई-चारा को महत्व दिया जा रहा हो।

लेखक भाई-चारे की तुलना दूध-पानी के मिश्रण से किया है। ये भाई-चारे को दूसरा लोकतंत्र कहते हैं।

लेखक अंत में कहते हैं कि समाज में एक-दूसरे के प्रति श्रद्धा और सम्मान की भावना रखना चाहिए। ताकि समाज में जाति प्रथा का अंत किया जा सके।

श्रम विभाजन और जाति प्रथा Subjectives

प्रश्न 1. लेखक किस विडंबना की बात करते हैं ? विडंबना का स्वरूप क्या है? (2012C)

उत्तर- आधुनिक युग में भी जातिवाद का पोषण होना, इसके पोषकों की कमी नहीं होना, इस तरह की प्रथा को बढ़ावा देना, लेखक के विचार से विडंबना माना गया है।

प्रश्न 2. जाति भारतीय समाज में श्रम-विभाजन का स्वाभाविक रूप क्यों नहीं कही जा सकती? (2014A, 2016A)

उत्तर- भारतीय समाज में जाति प्रथा, श्रम-विभाजन का स्वाभाविक रूप नहीं कही जा सकती, क्योंकि यह मनुष्य की रुचि पर आधारित नहीं है। इसमें मनुष्य की निजी क्षमता का विचार किए बिना उसका पेशा निर्धारित कर दिया जाता है।

प्रश्न 3. सच्चे लोकतंत्र की स्थापना के लिए लेखक ने किन विशेषताओं को आवश्यक माना है? (2016A)

उत्तर- लोकतंत्र मूलतः सामूहिक जीवनचर्या की एक रीति तथा समाज के सम्मिलित अनुभवों के आदान-प्रदान का नाम है । सच्चे लोकतंत्र की स्थापना के लिए समानता, भाईचारा एवं स्वतंत्रता आवश्यक है।

प्रश्न 5. अम्बेदकर के अनुसार जाति-प्रथा के पोषक उसके पक्ष में क्या तर्क देते हैं? (2014A)

उत्तर- जातिवाद के पक्ष में इसके पोषकों का तर्क है कि आधुनिक सभ्य समाज 'कार्य-कुशलता' के लिए श्रम-विभाजन को आवश्यक मानता है और चूँकि जाति प्रथा भी श्रम-विभाजन का ही दूसरा रूप है, इसलिए इसमें कोई बुराई नहीं है।

प्रश्न 4. लेखक ने पाठ में किन प्रमुख पहलुओं से जाति प्रथा को एक हानिकारक प्रथा के रूप में दिखाया है? (2015A)

उत्तर- जाति प्रथा में श्रम-विभाजन मनुष्य की स्वेच्छा पर निर्भर नहीं रहता । इसमें मानवीय कार्यकुशलता की वृद्धि नहीं हो पाती। इसमें स्वभावतः मनुष्य को दुर्भावना से ग्रस्त रहकर कम और टालू कार्य करने को विवश होना पड़ता है।

प्रश्न 6. जातिवाद के पक्ष में दिए गए तर्कों पर लेखक की प्रमुख आपत्तियाँ क्या हैं? (2016C)

उत्तर-(क) जाति प्रथा श्रम-विभाजन के साथ-साथ श्रमिक विभाजन का भी रूप लिए हुए है।

(ख) इस प्रथा में श्रमिकों को अस्वाभाविक रूप से विभिन्न वर्गों में विभाजित किया जाता है।

(ग) इसमें विभाजित वर्गों को एक-दूसरे की अपेक्षा ऊँच-नीच भी करार दिया जाता है।

(घ) जाति प्रथा पर आधारित विभाजन मनुष्य की रुचि पर आधारित नहीं है।

1. श्रम विभाजन और जाति प्रथा Objectives

प्रश्न 1.मानव मुक्ति के पुरोधा किसे कहा गया है?

(क) अमरकांत (ख) नलिन विलोचन शर्मा

(ग) भीमराव अम्बेडकर (घ) पंडित बिरजू महाराज

Excellence Coaching Institute By - Tabrej Alam

उत्तर- (ग) भीमराव अम्बेडकर

प्रश्न 2.भारत में जाति-प्रथा का मुख्य कारण क्या हैं?

(क) बेरोजगारी (ख) गरीबी

(ग) उधोग धंधो की कमी (घ) अमीरी

उत्तर-(क) बेरोजगारी

प्रश्न 3.जाती प्रथा स्वाभाविक विभाजन नही है, क्यों?

(क) भेदभाव के कारण (ख) शोषण के कारण

(ग) गरीबी के कारण (घ) रूची पर आधारित नही होने के कारण

उत्तर- (घ) रूची पर आधारित नही होने के कारण

प्रश्न 4.'श्रम विभाजन और जाति प्रथा' के लेखक कौन हैं ?

(क) डॉ0 राममनोहर लोहिया (ख) महात्मा गॉधी

(ग) भीमराव अम्बेदकर (घ) डॉ0 सम्पूर्णानंद

उत्तर- (ग) भीमराव अम्बेदकर

प्रश्न 5.लेखक बेरोजगारी का प्रमुख और प्रत्यक्ष कारण किसे मानते हैं ?

(क) आशिक्षा को (ख) जनसंख्या को

(ग) जाति प्रथा को (घ) उधोग धंधो की कमी को

उत्तर- (ग) जाति प्रथा को

प्रश्न 6.आधुनिक सभ्य समाज श्रम विभाजन को आश्चयक क्यों मानता हैं ?

(क) कार्य कुशलता के लिए (ख) भाई चारे के लिए

(ग) रूढिवादिता के लिए (घ) इनमें से कोई नही

उत्तर- (क) कार्य कुशलता के लिए

प्रश्न 7.'श्रम विभाजन और जाति प्रथा' पाठ बाबा साहेब के किस भाषण का संपादित अंश हैं ?

(क) द कास्ट्स इन इडिया : देयर मैकेनिज्म

(ख) जैनेसिस एण्ड डेवपलमेंट

(ग) एनिहिलेशल ऑफ कास्ट

(घ) हू इज सुद्राज

उत्तर- (ग) एनिहिलेशल ऑफ कास्ट

प्रश्न 8.अम्बेदकर का जन्म किस परिवार में हुआ था ?

(क) ब्राहमण (ख) क्षत्रिय

(ग) दलित (घ) कायस्थ

उत्तर- (ग) दलित

प्रश्न 9.'आदर्श समाज स्वतंत्रता, समानता, भातृत्व पर आधारित होगा ?

(क) मैक्स मूलर (ख) भीमराव अम्बेदकर

(ग) बिरजू महाराज (घ) अज्ञेय

उत्तर- (ख) भीमराव अम्बेदकर

प्रश्न 10.डॉ0 भीमराव अम्बेदकर का जन्म कब हुआ ?

(क) 14 अप्रैल, 1988 (ख) 14 अप्रैल, 1989

(ग) 14 अप्रैल, 1890 (घ) 14 अप्रैल, 1891

उत्तर- (घ) 14 अप्रैल, 1891

प्रश्न 11.डॉ0 भीमराव अम्बेदकर का जन्म कहॉ हुआ ?

(क) महू, मध्यप्रदेश (ख) गोरखपूर, उत्तर प्रदेश

(ग) डुमरॉव, बिहार (घ) दानकुनी, पश्चिम बंगाल

उत्तर- (क) महू, मध्यप्रदेश

प्रश्न 12.जाति प्रथा श्रम विभाजन के साथ-साथ किसका रूप लिए हुए हैं ?

(क) स्वतंत्रता का (ख) भातृत्व का

(ग) श्रमिक विभाजन का (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर- (ख) भातृत्व का

प्रश्न 13.डॉ0 भीमराव अम्बेदकर ने किस प्रथा को आर्थिक पहलू से खतरनाक माना हैं ?

(क) सती प्रथा (ख) दहेज प्रथा

(ग) बाल विवाह प्रथा (घ) जाति प्रथा

उत्तर- (घ) जाति प्रथा

Excellence Coaching Institute By - Tabrej Alam